[library stamp]

विषय : ये आँसू कब तक बहेंगे।

आँसू है मेरा असत्र

बहुत रात हो चुका है। रात के अंधकार ने सारे अंबर को पकड़ लिया है। अंधकार को पारकर शशी किरणें आ गई है। झिलमिल करते हुए तारे हस रही है। हरियाली भरी पेड़ो के पत्ते को छूकर ठंडी हवाँ बह रही है। एक सुनसान जगह... दूर से एक रोशनी दिख रही थी। वह एक छोटा सा घर था। पास के खिड़की खुला हुआ था। खिड़की के पास बैठी हुई एक सुंदर सी लड़की। रिया...

उसकी खुबसूरत बालों को छूकर हवाँ के ~~झोंके बह~~ रही थी। उसकी कमल जैसे नयन से आँसू बहती जा रही थी। नजाने रिया क्यों रही थी। अचानक से एक आवाज आया। "रिया बेटी.... तुम कहाँ हो? कबसे आवाज निकाल रही हूँ। जल्दी नीचे आ जाओ।" पुकारने के आवाज सुनकर रिया अपनी आँसू पोंचकर अपने कमरे से दौड़कर नीचे गया। धीरे-धीरे सीढ़ियों से गुजरा।

वह पुकारने वाली और कोई नहीं रिया कि दादी मी। बचपन से लेकर रिया अपनी दादी के साथ जिंदगी बिताती थी। उसकी एक छोटा भाई भी है। लेकिन वह लड़का चल नहीं सकता। रिया के माँ-बाप लापता है क्या।

रिया दादी के पास गया। उनसे पूछा, "दादी... आपने मुझे क्यों बुलाया? कोई खास बात? क्या आपने अपनी दवाई खा ली?" दादी ने कहाँ, "अरे पगली... इसी कलिक ही तो मैंने तुम्हें बुलाया। जल्दी से आओ।" रिया दादी के दवाई लेकर उनको पिलाया।

दादी बहुत बीमार है इसीलिए वह अपने जगह से उठ नहीं सकते। रिया ही एक है जो इस घर कलिक कमाती है। उसे घर के सारे काम अकेली ही संभालना है। दादी और भाई के खयाल भी रखना है। इसके साथ-साथ उसकी पढ़ाई। इसने अपने बचपन से बहुत कुछ सहा है। छोटे उम्र में ही बहुत कुछ देखा है और सुना है। आज भी वह बहुत कुछ सह रही है। नजाने क्या है वह जो उसे इतनी परेशान

करती है। सुबह का समय सूरज के किरणे सारी जगह पर फैल गया था। रिया अपनी बिसतर से उठकर अपने काम शुरू किया। घर के सारे काम खतम करके वह घर से निकला। गाँव से गुजरते वक्त वहाँ के लोग उसे बुरी नजर से देख रही थी। लेकिन उसने उस नजरों को दकलअंदाज करके अपने हिसाब से चलना शुरू किया। रिया को जानकर पता चला कि वह ~~जिस~~ जिस जगह काम करने जाती है वह बिलकुल ठीक जगह नहीं थी। वह जगह 'सोनागाची' था। क्या आप जानते हो वह जगह इतनी बुरा क्यों है? ~~वह~~ सोनागाची... जिस जगह पे सारे छोटे, बड़े लड़कियाँ अपने मान सम्मान को दाव पर लगाकर अन्य पुरुषो केलिए काम करती है। अपने जिंदगी आगे ~~ब~~ गुजारने केलिए, पैसे केलिए सारी हद पार करकर दूसरो को अपना शरीर देती है। कैसे कुछ जगह है

सोनागाची। उसको दादी और भाई को जरा भी अंदाजा नहीं है इसके बारे में। रिया अकसर घर बहुत रात आती थी। आते वक्त कुछ खाना भी अपने साथ लेकर आया होगा। पिछले दो-तीन साल से उसने यह काम शुरू किया था। आज भी वह इसी काम पर है। वह मन ही मन यह बिलकुल भी नहीं चाहती थी। लेकिन इसके मजबूरी उससे यह करवाती है। तक-तक पल वह अंदर ही अंदर जल रही है। लेकिन घर चलाने केलिए उसके पास और कोई चारा नहीं थी।

रिया जब छोटी थी तो उसके माँ-पापा उसके साथ थी। लेकिन अब दोनों के बीच हमेशा जगड़ा था। तक भी दिन चैन से नहीं सोया था। उसके पापा बहुत बुरा व्यवहार करता था। सालों तक ऐसी ही चलती रही। तक दिन जब रिया स्कूल केलिए निकला तो बीच रास्ते पर तक चिल्लाने की

सोनागाची। उसको दादी और भाई को जरा भी अंदाजा नहीं है इसके बारे में। रिया अकसर घर बहुत रात आती थी। आते वक्त कुछ खाना भी अपने साथ लेकर आया होगा। पिछले दो-तीन साल से उसने यह काम शुरू किया था। आज भी वह इसी काम पर है। वह मन ही मन यह बिलकुल भी नहीं चाहती थी। लेकिन इसके मजबूरी उससे यह करवाती है। तक-तक पल वह अंदर ही अंदर जल रही है। लेकिन घर चलाने के लिए उसके पास और कोई चारा नहीं थी।

रिया जब छोटी थी तो उसके माँ-पापा उसके साथ थी। लेकिन अब दोनों के बीच हमेशा जगड़ा था। एक भी दिन चैन से नहीं सोया था। उसके पापा बहुत बुरा व्यवहार करता था। सालों तक ऐसी ही चलती रही। एक दिन जब रिया स्कूल के लिए निकला तो बीच रास्ते पर एक चिल्लाने की

...ARY SCHOOL ... 11121 ... OD ★

आवाज सुना। रिया को पता था, कि वह उसकी माँ के आवाज थी। लेकिन उसके स्कूल बस बाहर इंतजार कर रही थी। वह लौटकर माँ के पास जा नहीं सका। उस दिन स्कूल पहुचकर उसे बिलकुल भी चैन नहीं मिल रहा था। क्योंकि उसे पता था कि पापा उनके साथ, कोई न कोई तकलीफ़ ज़रूर कर रही होगी। जब घर आने के समय हुआ तो रिया भागकर जल्दी घर आया। तब उसने देखा कि उसकी माँ जमीन पर बेहोश पड़ी थी। वह जल्दी कुछ पानी लेकर आया और माँ को उठा दिया। उसने पूछा, "माँ.... आपको क्या हो गया? पापा ने आपके साथ क्या किया? आप ठीक हो? बोलो ना माँ..." माँ दर्द से रो रही थी। उनकी जुबान से आवाज तक नहीं आ रही थी। कुछ देर बाद उन्होंने जवाब दिया "रिया तुम रो मत..। मैं ठीक हूँ।. पापा ने मेरा गला पकड़कर बाल खींचकर जमीन पर गिराया। गिरते वक्त सिर नीचे कराया।" रिया छोटी थी इसीलिए वह कुछ भी नहीं कर पाया।

ऐसे हमेशा होती थी। कई साल ऐसे बीत गए। एक दिन अचानक उसकी माँ लापता होगया। माँ के बारे मे कोई भी जानकारी नहीं थी। एक महीने बाद उसके पापा ने स्वयं अपना हत्या कि। उसके बाद रिया बिलकुल अकेली पड़ गई थी। इतनी सबकुछ होने के बावजूद उसने अपना हौसला नहीं हरा। ऐसे चलते-चलते उसे अपनी जिंदगी गुजारी। और आप उसे अपनी मजबूरी के कारण समूह में उपेक्षित वर्ग के समान अकेली जीना पड़ रहा था। पता नहीं उस मासूम लड़की कितने आँसू बहाए होंगे। वह जहा भी जाती थी सब लोग उसे एक वेश्या के समान, बुरी नजर से देखती थी। इसीलिए दूसरे आदमियों या लड़के उसको छेड़ते भी थे। लेकिन कोई भी उनके दुख या मजबूरी जानने के कोशिश नहीं करते। सिर्फ उन्हे तकलीफ और दर्द देता है। ऐसे काम करने वालो को भी जिंदगी नामक चीज होती

लिया। हाँथ - पैर बाँधकर आसपास के जंगल में ले गया। रात के अंधकार सब कुछ देख रहा था। उन लड़कों ने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। पाँच लड़के मिलकर एक मासूम मासूम सी जान को मार रहा था। सबकुछ करने के बाद उसे वहाँ छोड़कर लड़के भाग गये। उसके आँखों से आँसू बहती जा रही थी।

उसकी साँसे चल रही थी। सुबह हो गया। एक बुढ़ियाँ जंगल के पास से गुजर रही थी। तब रिया कि रोने की आवाज सुनते - सुनते रिया के पास आ गई। उन्होंने उसे अपने गोद में लेकर जल्दी पास के अस्पताल लेकर गया। उसकी जान खतरे में थी। डॉक्टर के कहाँ कि वह बचना मुशकिल है। डॉक्टर ने कहा " आप उसके लिए दुआ कीजिए"। कुछ घंटे बाद आशचर्य से रिया बच गई। वह खतरे के बाहर थी।

दर्द भरे दिन गुजर गए। रिया अपनी
जिंदगी मे वापस आ गई। इसने यह
फैसला लिया कि उसके जीवन के सारे
चीज को एक किताब रूप मे बना ले!
रिया ने ऐसा ही किया। एक साल बाद
उसकी किताब का प्रकाशन होने वाली थी।
उस दिन उसकी जिंदगी का बहुत खास
दिन था। प्रकाशन के समय पर एक
बड़ा भीड़ उसके सामने बैठा था।
उसने अपने किताब को प्रकाशन करते हुए
कहा "आप सभी मुझको जानते हैं। मैं
ही वह लड़की हूँ जो दो साल पहले
क्रूर पीड़न से गुजरी हूँ। मैं
मुझे कोई शर्म नहीं है इस बात पे
कि मैं एक वेश्या हूँ। क्योंकि आप जैसे
लोग सिर्फ उन्हें दर्द देती हैं और कुछ
नहीं। मैंने अपने जीवन मे बहुत दुख
सहा है। और पता नहीं मेरे
इस आँखों से कितने बार आँसू बहाए।

आप लोगो से मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि लड़कियां किसी और के हाँथों का कटपुतली नहीं है। दूसरो कोतिस जिंदगी जिताने वाले चीज नहीं है। इन्हें भी कई सारे सपने होते है। लेकिन ऐसे भी लोग है जो अपनी मजबूरी के कारण ऐसा करना पड़ता है। ऐसे लोगो को इस रास्ते से हटाकर उन्हें हौसला दिलाकर आँगे बढ़ने की प्रेरणा देना चाहिए। मुझे पता नहीं "ये आँसू कब तक बहेंगे" लेकिन इस आँसू को पीकर मैं आँगे जरूर जाऊंगा।" सारी भीड़ तालियाँ बजाकर खड़ी होगयी। उस दिन से शिफा के जिंदगी एक नई मोड़ ले गई। ...